अनुभूति के विविध रंग : डॉ. अमिता दुबे

दिव्या सिंह
शोधार्थिनी,
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर

डॉ. रमेश प्रताप सिंह
शोध निर्देषक,
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर

साहित्य के क्षेत्र में 'आलोचना का कार्य कवि और उसकी कृति का यथार्थ मूल्य प्रकट करना है। इसके लिए कृति में व्याप्त गुणों का उद्घाटन और दोषों का विवेचन तो उसका कार्य है ही, साथ ही उसका समाज में और अन्य कलाकृतियों के बीच क्या स्थान और महत्त्व है, यह स्पष्ट करना भी आलोचना का ही कार्य है। कलात्मक उत्कृष्टता का पूर्ण प्रकाशन आलोचना का श्रेय कार्य है।'[1] डॉ श्याम सुन्दर दास का मानना है कि – 'साहित्य क्षेत्र में, ग्रन्थ को पढ़कर उसके गुणों और दोषों का विवेचन करना और उसके सम्बन्ध में अपना मत प्रकट करना आलोचना कहलाता है। यह आलोचना काव्य, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि सभी की हो सकती हैं।[2] किसी भी विधा की किसी भी कृति की आलोचना स्वतंत्रता पूर्वक की जा सकती है। इसके साथ भी यह अनिवार्य रूप से माना जाता है कि 'आलोचना के कार्य के दो प्रधान पक्ष हैं– एक तो कवि या कलाकार की कृति की पूर्ण व्याख्या का और दूसरा उसके महत्त्व एवं मूल्यनिरूपण का।'''[3]

अमिता दुबे कवयित्री, उपन्यासकार, कहानीकार होने के साथ ही एक सिद्धहस्त आलोचक और समीक्षक भी है। उनकी अब तक **'छायावादी काव्य पथिक : महादेवी निराला', 'अनुभूति के रंग', 'दीपक सा मन', 'अनूठे सर्जक मुक्तिबोध', 'कहानीकार मुक्तिबोध', 'आक्रोश के कवि मुक्तिबोध'** नाम से लगभग छः आलोचनात्मक कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं और इनके साथ ही 'कविता की आहटें', 'कविता की पदचाप', 'कविता की अनुगूंज', 'कविता की प्रतिध्वनि' और 'कहानी की करवटें नाम से पाँच समीक्षात्मक पुस्तकें भी प्रकाशित हैं ।

'अनुभूति के विविध रंग' अमिता दुबे की एक प्रमुख आलोचनात्मक कृति है। जिसमें 'उन्होंने अपनी प्रखर प्रतिभा और अनुभूति की अंतर्दृष्टि मध्यकालीन और आधुनिक कालीन काव्य को 'प्रधानमल्ल विर्वहण' न्याय के माध्यम से सुविवेचित किया गया है।'[4] इस पुस्तक में ग्यारह प्रमुख साहित्यकारों के साहित्य का अनुशीलन करते हुए महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष प्रतिपादित किये गए हैं। इस पुस्तक में सूरदास, रविदास, निराला, महादेवी, मुक्तिबोध, शमशेर, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, रामविलास शर्मा, दुष्यंत कुमार और राही मासूम रजा पर अलग अलग स्वतंत्र आलेख को संकलित किया गया है।

सूरदास भारतीय साहित्य के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। **'सूर ने दिया 'कृष्ण' को सोलह कलाओं का कलेवर'** लेख में अमिता दुबे नें कृष्ण को हिंदी साहित्य में स्थापित करने में सूर के महत्त्व को रेखांकित करते हुए लिखा है–

'हिंदी में कृष्ण काव्य का विस्तृत, सुव्यवस्थित और चतुर्मुखी सृजन भक्तिकाल में हुआ। दक्षिण भारत के अलवार भक्तों के माध्यम से उपजी कृष्ण भक्ति की अलख उत्तर भारत में स्वामी रामानंद ने

जगाई। कालक्रम में भक्ति काल के प्रसिद्ध कवि सूरदास ने इस कथा को ग्रहण किया और स्वयं कृष्णमय हो गये। विस्तार, व्यापकता, भावात्मकता और काव्यात्मकता आदि सभी दृष्टियों में सूर का काव्य अद्वितीय है।'[5]

इसके साथ ही वह यह भी रेखांकित करती हैं कि– 'कृष्ण के चरित्र में जो सहज समाज स्वीकृति आज देखने को मिल रही है वह सूरदास के सामाजीकरण का ही परिणाम है अन्यथा आज कृष्ण को केवल 'योगेश्वर' तक माना जाता। उन्हें नटवरनागर गोविंदा और सोलह कलाओं से पूर्ण बनाने में महाकवि सूरदास का महत्त्वपूर्ण एवं स्तुत्य योगदान है।'[6]

पुस्तक के अगले भाग **'प्रभुजी ! तुम चन्दन हम पानी.....'** में अमिता दुबे नें **रैदास** के महत्त्व को रेखांकित किया है। वह लिखती हैं कि– 'संत रविदास भक्ति काव्य धारा के ऐसे कवि हैं जहां भक्त 'कर्म' में 'भक्ति' या 'मुक्ति' खोजता है। उसकी यह खोज उसे मुक्तिकामी मार्ग से आगे बढ़ाती हुयी प्रभु भक्ति में लीं होने का संस्कार देती है। यह संस्कार कविता के माध्यम से पुष्ट होता है और समाज को जीवन शैली का एक सुन्दर विकल्प देता है।'[7]

सूरदास और रैदास के उपरान्त उन्होनें **'मैं नीर भरी दुःख की बदली....'** शीर्षक लेख में **महादेवी वर्मा** के साहित्य का मूल्यांकन किया है। महादेवी वर्मा अमिता दुबे की प्रिय कवयित्री हैं। यही कारण हैं कि उन्होंने महादेवी पर स्वतंत्र रूप से भी दो पुस्तकों का सृजन किया है। इस लेख में भी उन्हीं विचारों और मान्यताओं का बढ़ाव है।

इसके उपरान्त उन्होंने छायावाद के एक अन्य महत्त्वपूर्ण आधार स्तम्भ **निराला** पर **'होगी जय, होगी जय हे पुरुषोत्तम ! नवीन**.....' लेख के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये हैं। उनका मानना है कि–

'निराला अपनी आंतरिक शक्ति से वैदिक परम्परा को पुनर्जीवित करना चाहते थे। साहित्य में नयी शैली अथवा पद्धति का आविष्कार करके यश भागी होना उनका लक्ष्य कदापि न रहा। उन्होंने वैदिक ऋषियों की भांति ओज भरी वाणी में राष्ट्र की सोयी हुयी शक्तियों को जागृत करने का उपक्रम किया। जागृत ही नहीं गहरी नींद में सोयी हुई जन शक्ति को झकझोर कर उठाने का संकल्प लेकर निराला नें अपनी रचनाधर्मिता को सार्थकता प्रदान की। ऐसा करने के लिए उन्हें भाषा, छंद, लय और अर्थधर्मिता के कोई भी बंध स्वीकार नहीं थे।

उन्होंने मुक्त छंद का समर्थन किया (अथवा आविष्कार किया) तो सर्वत्र इस प्रयास का विरोध हुआ पर वे डेट रहे। नए छन्द की अनिवार्यता से संभवतः निराला अधिक परिचित थे।[8] यह सत्य भी है कि निराला के मुक्त छंदों नें कविता की चली आ रही परम्परागत रुढ़ियों को तोड़ा और अपने प्रतिमान स्वयं सथापित किये।

निराला के उपरान्त अमिता दुबे नें हिंदी में सर्वाधिक जटिल और दुरूह समझे जाने वाले कवि **मुक्तिबोध** को **'मुक्तिबोध के मिथक'** के माध्यम से व्याख्यायित किया है। उनका परिचय देते हुए लेख के प्रारम्भ में ही वह लिखती हैं–

'मुक्तिबोध अँधेरे में बीज बन पौधे को विकसित कर गहन अन्धकार में विलीन हो गए जो जिसकी सृष्टि ब्रह्मा नें बड़ी चतुराई से की है।'[9]

इसके साथ ही वह मानती हैं कि मुक्तिबोध नें कविता की मान्यता बदल दी। उनकी कविता प्रचलित काव्य–परिपाटी को ध्वंस करती है।

पुस्तक के अगले चरण में प्रगतिवाद के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर **शमशेर** की कविता का मूल्यांकन किया गया है। **'मानवीय संभावनाएँ और शमशेर की कविता'** लेख में उन्होंने स्थापित किया है कि यद्यपि शमशेर नें 'पन्त से कविता की भाषा, शिवदान सिंह चौहान से प्रगतिशील आन्दोलन में अभिरुचि तथा निराला, जोश, लोर्का, मायाकाव्सकी, इलियट, पाउंड, कमिंग्स, हापकिंस आदि देशी–विदेशी कवियों से भी प्रभाव ग्रहण किये हैं। परन्तु देश विदेश के कवियों से प्रभाव ग्रहण करने के बाद भी शमशेर की कविता अपना रास्ता स्वयं बनाती है। शिल्प और वस्तु विधान के क्षेत्र में उन्होंने जो मौलिकता दिखाई है उससे वे किसी 'वाद विशेष' की परिधि में नहीं आबद्ध किये जा सकते। वाद जैसी किसी चीज को घटा कर देखने से शमशेर के कवि को हम उलझावों और असंगतियों के एकदम बाहर पाते हैं। वस्तुतः वह जीवन और यथार्थ के कवि हैं।'[10]

पुस्तक के अगले लेख **'शक्ति मेरी लेखनी में...'** में वह प्रगतिवाद के प्रमुख हस्ताक्षर **केदारनाथ अग्रवाल** की कविताओं का अनुशीलन करती हैं।

'केदारनाथ अग्रवाल यूँ तो प्रकृति के, प्रेम के कवि हैं। उनकी प्रारम्भिक रचनाओं में छायावादी प्रभाव दृष्टिगत होता है लेकिन धीरे–धीरे उनका रुझान सामान्य जन की पीड़ा और संघर्ष के चित्रण की और बढ़ने लगा। मार्क्सवाद के प्रति भावनात्मक लगाव के कारण उनकी रचनाओं में लाल सबेरा, लाल किरन, रूस, चीन आदि की भूरि–भूरि प्रशंसा मिलती है। लेकिन धीरे–धीरे कवि की संवेदना में गरीबों, शोषितों की बदहाली, रोजी–रोटी के लिए दिन रात जी तोड़ मेहनत करने की विवशता के मार्मिक प्रसंग सामने आते हैं।'[11]

इसके साथ ही वह यह भी कहती हैं कि– 'कवि केवल शोषण तंत्र पर ही प्रहार नहीं करता बल्कि आजादी की वास्तविकता को भी प्रत्यक्ष रखते हैं। ....यह दर्द कवि केदार की कविता का विषय है।'[12] इस अध्याय में केदार नाथ सिंह की कविताओं की आलोचनात्मक व्याख्या की गयी है।

'व्यंग्य और आक्रोश के कवि नागार्जुन' लेख में नागार्जुन के सृजन कर्म को आलोचनात्मक दृष्टि से जाँचा परखा गया है। अमिता दुबे नें लिखा है कि नागार्जुन को 'विभाजनों में विशवास नहीं है। ऐसे समाज के प्रति वह अपना तीव्र आक्रोश व्यक्त करते हैं। जिसमें बलवान का ही बोलबाला हो और कमजोर व्यक्ति पैरों तले रौंदा जा रहा हो ! नारी को नागार्जुन एक पददलित और अधिकारों से वंचित व्यक्ति के रूप में देखते हैं। वह भी उनकी दृष्टि में सामन्ती व्यवस्था के दमन की शिकार है अतः उसकी पूर्ण मुक्ति की उन्हें कामना है। नागार्जुन परम्परा प्रथित, आत्मा, परमात्मा, ईश्वर, स्वर्ग, नरक सभी को ढ़कोसला मात्र मानते हैं। उनके लिए एकमात्र व्यक्ति और समाज ही सत्य है। सामाजिक व्यवस्था ही उनका मूल प्रतिपाद्य है। वह आँखों देखि जीवन के वर्तमान की ही बात करते है। आदर्शों से उन्हें चिढ़ है वह यथार्थ के अनुयायी हैं लेकिन सत्य का दर्पण दिखाने के लिए व्यंग्य के तीर उनकी तरकश में पर्याप्त हैं।'[13]

आगे के भाग में उन्होंने **रामविलास शर्मा** और **दुष्यन्त कुमार** पर आलोचनात्मक दृष्टि से प्रकाश डाला है। दुष्यंत कुमार नें हिंदी गजल को एक नयी पहचान दी है। डॉ0 अमिता दुबे मानती है कि– 'दुष्यंत कुमार के लिए 'कविता' अस्तित्व से भी अधिक महत्त्व रखती थी। उसके साथ वे पूरी ईमानदारी से पेश आये। उसके लिए उन्होंने कभी नकली मुद्राओं और मुखौटों को नहीं स्वीकारा।

उनकी कविता अनुभूति की सच्चाई और प्रामाणिक जानकारी की कविता है, उसकी भाषा के तेवर नकली नहीं है।'[14]

साहित्यिक परिदृश्य में राही मासूम रजा को उपन्यासकार के रूप में पहचाना जाता है। डॉ. अमिता दुबे ने उनके कथाकार व्यक्तित्व से इतर उनके कवि व्यक्तित्व को जाँचा परखा है। अपने लेख **'संवदनशील रचनाकार : डॉ. राही मासूम रजा'** में उन्होंने उनकी कविताओं पर आलोचनात्मक दृष्टि डाली है।

इस प्रकार उन्होंने हिंदी साहित्य के भक्तिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के हिदी के महत्त्वपूर्ण कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के योगदान को रेखांकित किया हैं। सूरदास से लेकर राही मासूम रजा तक के फैले वितान से उनके आलोचकीय व्यक्तित्व का पता चलता है। अमिता दुबे नें अपनी प्रखर आलोचकीय दृष्टि से इन ग्यारह कवियों का मूल्यांकन किया है।

सन्दर्भ

1. मिश्र, भगीरथ (2008). काव्यशास्त्र–प्रकाशक–विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी, पृष्ठ–134
2. दास, श्याम सुन्दर (2013).साहित्यालोचन–प्रकाशक– भारतीय ज्ञानपीठ, लोदी रोड, नयी दिल्ली, पृष्ठ–175
3. मिश्र, भगीरथ (2008). काव्यशास्त्र–प्रकाशक–विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी, पृष्ठ–135
4. दुबे, अमिता (2013). अनुभूति के विविध रंग– फलैप से प्रकाशक–हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद–01
5. अनुभूति के विविध रंग– डॉ अमिता दुबे, वही, पृष्ठ–3
6. अनुभूति के विविध रंग– डॉ अमिता दुबे, वही, पृष्ठ–9
7. अनुभूति के विविध रंग– डॉ अमिता दुबे, वही, पृष्ठ–10
8. अनुभूति के विविध रंग– डॉ अमिता दुबे, वही, पृष्ठ–38
9. अनुभूति के विविध रंग– डॉ अमिता दुबे, वही, पृष्ठ–50
10. अनुभूति के विविध रंग– डॉ अमिता दुबे, वही, पृष्ठ–63
11. अनुभूति के विविध रंग– डॉ अमिता दुबे, वही, पृष्ठ–81
12. अनुभूति के विविध रंग– डॉ अमिता दुबे, वही, पृष्ठ–82
13. अनुभूति के विविध रंग– डॉ अमिता दुबे, वही, पृष्ठ–88–89
14. अनुभूति के विविध रंग– डॉ अमिता दुबे, वही, पृष्ठ–106